P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4* July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

बी0 एड0 शिक्षकों एवं अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों (बी0ए0, बी0एस0सी0, एवं बी0कॉम0) के शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

सारांश

किसी भी राष्ट्र की उन्नति एवं प्रगति का श्रेय वहाँ के समाज को जाता है। समाज में भी प्रमुख स्थान शिक्षक का होता है क्योंकि शिक्षक ही प्रभावशाली एवं उन्नतिशील समाज का निर्माण करता है। आज विश्व के जिन देशों ने शिक्षा और शिक्षक पर विशेष ध्यान दिया है उन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शानदार प्रगति की है। इसीलिए आज शिक्षा और शिक्षक का महत्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। शिक्षा प्रदान करने का प्रमुख दायित्व शिक्षकों पर होता है। इसलिए शिक्षकों को प्रशिक्षित एवं प्रभावशाली होना आवश्यक है। एक तो हमारे देश में शिक्षकों की भारी कमी है और जो हैं भी उनमें बहुत बड़ी संख्या में अप्रशिक्षित हैं। इसीलिए आज देश प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी से जूझ रहा है। प्रशिक्षित शिक्षकों की भूमिका आज हर तरफ महसूस की जा रही है खास तौर पर उच्च शिक्षा में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को छोड़कर समस्त संस्थानों में अप्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा ही शिक्षण कार्य किया जाता है। ऐसा मान लिया जाता है कि उन्होंने नेट/पी0–एच0डी का प्रमाण पत्र प्राप्त कर लिया है, इसलिए उनमें शिक्षक के समस्त गुण पैदा हो चुके हैं। यदि ऐसा होता तो किसी को किसी भी क्षेत्र में प्रशिक्षण की आवश्यकता न होती। ऐसा माना जाता है कि प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता अप्रशिक्षित शिक्षक की अपेक्षा ज्यादा विकसित होती है। इसलिए सरकार को प्रत्येक स्तर पर प्रशिक्षित एवं योग्य शिक्षकों की नियुक्ति करनी चाहिए, जिससे वे प्रभावशाली तकनीकों और विधियो को अपनाकर छात्र की शक्तियों का अधिकतम विकास कर सकें।

मुख्य शब्द : बी0एड0 शिक्षक, अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षक (बी0ए0, बी0एस0सी0, एवं बी0काम0) एवं शिक्षण प्रभावशीलता।

राम प्रकाश सैनी
सहायक आचार्य,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय,
कानपुर

प्रस्तावना

आज से 667 ईसा पूर्व चीनी दार्शनिक कुआन्त्सु ने ठीक ही कहा था कि यदि आप एक वर्ष की योजना बनाना चाहते हैं तो एक बीज बोईये यदि आप एक बीज बोएगें तो आपकों एक फसल मिलेगी इसी प्रकार यदि आप 200 साल की योजना बनाना चाहते हैं तो लोगों को पढ़ाईए। यदि आप लोगों को पढ़ायेगें तो आप हजारों शिक्षित पायेगें। आज विश्व के जिन देशों ने शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया है उन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शानदार प्रगति की है। इसीलिए आज शिक्षा का महत्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है और शिक्षा प्रदान करने का प्रमुख दायित्व शिक्षकों पर है। हमारे देश में शिक्षकों तो बहुत हैं लेकिन आज देश प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी से जूझ रहा है। प्रशिक्षित शिक्षकों की भूमिका जहाँ आज हर तरफ महसूस की जा रही है वहीं आज भी देश में बहुत बड़ी संख्या में अप्रशिक्षित शिक्षक शिक्षण कार्य कर रहे हैं। खास तौर पर उच्च शिक्षा में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को छोड़कर समस्त संस्थानों में अप्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा ही शिक्षण कार्य किया जाता है। ऐसा मान लिया जाता है कि उन्होंने नेट/पी0–एच0डी का प्रमाण पत्र प्राप्त कर लिया है, इसलिए उनमें शिक्षक के समस्त गुण पैदा हो चुके हैं। यदि ऐसा होता तो किसी को किसी भी क्षेत्र में प्रशिक्षण की आवश्यकता न होती। ऐसा माना जाता है कि प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता अप्रशिक्षित शिक्षक की अपेक्षा ज्यादा विकसित होती है।

संतवाणी संग्रह में यह दर्शाया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी सहारे की आवश्यकता होती है। वह किसी अनुभवयुक्त ज्ञानी व्यक्ति की अंगुली पकड़कर अपना मार्ग तय करना चाहता है। इस संसार में दूध पिलाने

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4* July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

वाले तो बहुत हैं परन्तु उसके विष को पीने वाले अल्प ही दिखायी पड़ते हैं। आज इस समाज में ऐसा व्यक्ति अध्यापक ही दिखायी पड़ता है, जो समाज की बुराई को पहचानकर उसी प्रकार शिक्षण कार्य करता है कि इस समाज से बुराई को मिटाया जा सके। इसीलिए एक अध्यापक की शिक्षण क्षमता इतनी प्रभावशाली होनी चाहिए जिससे शिष्यों में ऐसे गुणों का विकास हो सके जिसके द्वारा वे समाज को सूर्य के प्रकाश की प्रकाशवान कर सकें।

राष्ट्र का सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक व नैतिक विकास एवं समृद्धि तभी सम्भव है जब देश के अध्यापक कर्तव्यनिष्ठ, योग्य, कार्यकुशल एवं विश्वसनीय आदि गुणों से पूर्ण हों। इन गुणों का समुचित रूप से विकास अध्यापकों में प्रशिक्षण द्वारा ही सम्भव है। ऐसा माना जाता है कि एक बी0 एड0 अध्यापक में ऐसे गुण विद्यमान होते है क्योंकि प्रशिक्षण के दौरान उनमें यही सारे गुण विकसित किये जा सकते हैं इन्हीं गुणों के कारण प्रशिक्षित अध्यापक अपनी कक्षा में ऐसा वातावरण निर्माण करने में सफल हो पाता है कि उसके छात्र कुशलता के साथ अपना अध्ययन कार्य पूर्ण कर सकें, जबकि अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षक अत्यधिक ज्ञान होने के बाद भी अपने ज्ञान को पूर्णता छात्रों के सम्मुख व्यक्त नहीं कर पाते हैं क्योकि समाहित ज्ञान को छात्रों तक पहुँचाना भी कला है जों अनुभव एवं प्रशिक्षण के द्वारा अपने अन्दर विकसित की जाती है।

समस्या की उत्पत्ति

वर्तमान समय में स्नातक पूर्व शिक्षा में शिक्षण हेतु शिक्षक प्रशिक्षण में डिग्री या डिप्लोमा की अनिवार्य आवश्यकता है परन्तु स्नातक स्तर के उपरान्त शिक्षण के लिए किसी भी प्रकार की प्रशिक्षण डिग्री की आवश्यकता नहीं होती है, उसके लिए केवल नेट/पी0एच–डी के प्रमाण पत्र की आवश्यकता होती है। कई बार ऐसी मॉग उठ चुकी है कि स्नातक स्तरीय शिक्षा के लिए भी प्रशिक्षण की अनिवार्यता होनी चाहिए क्योंकि प्रशिक्षण के द्वारा शिक्षक में शिक्षण प्रभावशीलता को बढ़ाया जा सकता है। इसीलिए शोधकर्ता के मन में यह जिज्ञासा हुई कि बी0 एड0 स्तर पर अध्यापनरत और स्नातक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई अन्तर प्रतीत होता है? इसीलिए शोधकर्ता ने निम्न विषय को शोध हेतु चुना है–

समस्या कथन

बी0 एड0 शिक्षकों एवं अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षका (बी0ए0, बी0एस0सी0, एवं बी0काम0) के शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

बी0 एड0 शिक्षक

बी0 एड0 शिक्षकों से तात्पर्य उन शिक्षकों से है जो वर्तमान में सरकारी एव गैर सरकारी बी0 एड0 महाविद्यालयों में अध्यापनरत हैं।

अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षक

अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों से तात्पर्य उन शिक्षकों से है जो महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में स्नातक स्तर (बी0ए0, बी0एस0सी0, एवं बी0काम0) आादि पर अध्यापनरत हैं।

शिक्षण प्रभावशीलता

शिक्षण प्रभावशीलता का तात्पर्य शिक्षक की कार्यक्षमता से है। जिस हद तक शिक्षक अपने शिक्षण कार्य में कुशल हो पाता है उसी हद तक उसे प्रभावशाली समझा जाता है।

शोध के उद्देश्य

1. बी0एड0 शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना
2. अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों (बी0ए0, बी0एस0सी0, एवं बी0काम0) की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना
3. बी0एड0 एवं अन्य स्नातक स्तरीय (बी0ए0, बी0एस0सी0, एवं बी0काम0) शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

1. बी0एड0 शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता का वितरण सामान्य स्तर का होता है
2. अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों (बी0ए0, बी0एस0सी0, एवं बी0काम0) की शिक्षण प्रभावशीलता का वितरण सामान्य स्तर का होता है।
3. बी0एड0 एवं अन्य स्नातक स्तरीय (बी0ए0, बी0एस0सी0, एवं बी0काम0) शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर होता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

प्राचीन समय में ऐसा माना जाता था कि शिक्षक जन्म जात होते थे लेकिन मनोविज्ञान के उदय के साथ एक बात स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ती है कि उन शिक्षकों में भी कहीं न कहीं कुछ कमियॉ थीं। उस समय शिक्षा शिक्षक प्रधान थी परन्तु आज यह छात्र प्रधान हो गयी है और ऐसा माना जाना लगा है कि यदि हम छात्र की प्रतिभाओं का सर्वोत्तम उपयोग करना चाहते है तो हमें छात्र को समझना होगा। उसकी योग्यताओं और क्षमताओं का ध्यान में रखना होगा, तभी शिक्षक का शिक्षण प्रभावशाली हो सकता है और छात्र का अधिकतम विकास कर पाने में सफल हो सकता है। यही मान कर शिक्षण पूर्व प्रशिक्षण की व्यवस्था प्रारम्भ की गयी। आज कहीं न कहीं यह मॉग की जा रही है कि प्रत्येक स्तर पर शिक्षण पूर्व प्रशिक्षण की व्यस्था की जाए जिससे शिक्षक छात्रों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षण प्रक्रिया को सुनिश्चित करने की तरफ आगे बढ़ सकें और युवा क्षमताओं का सही प्रयोग देश हित में किया जा सके।

शोध का सीमांकन

1. प्रस्तुत शोध छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर तक सीमित है।
2. इसमें केवल बी0 एड0 एवं अन्य स्नातक स्तर के शिक्षकों को ही अध्ययन में शामिल किया गया है।
3. अन्य स्नातक स्तर तृतीय वर्ष में अध्यापनरत शिक्षकों को ही शामिल किया गया है।
4. इसमें केवल कानपुर जिले के शहरी क्षेत्र को ही शामिल किया गया है।

साहित्यावलोकन

शोधकर्ता के शोध से सम्बन्धित क्षेत्र में अभी तक जो कार्य हुए हैं उनमें मुख्य शोधकार्य निम्नलिखित हैं–

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4* July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

भल्ला, मनजीत (2011) कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र ने छात्रों के व्यवहार पर शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन किया और पाया कि शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता का छात्र के व्यवहार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सिरोही, रमेन्द्र (2012) चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ ने शिक्षकों के मूल्य एवं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन किया और पाया कि शिक्षकों के मूल्य और उनकी शिक्षण प्रभावशीलता में सकारात्मक सह सम्बन्ध होता है।

विष्ट, प्रमोद (2013) छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर ने माध्यमिक स्तर के विद्यालयी वातावरण का शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन और पाया कि विद्यालय का वातावरण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर सकारात्मक प्रभाव डालता है।

शर्मा, दीप्ती (2014) चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि बी0टी0सी0 अध्यापकों की अपेक्षा विशिष्ट बी0टी0सी0 अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता अधिक पायी गयी।

एस0 ईश्वरन और सिंह, अजीत (2015) जनकपुरी, नई दिल्ली ने प्राथमिक शिक्षकों की उनकी सेवा के दौरान की उनकी शिक्षण प्रभाव शीलता का अध्ययन किया और पाया कि प्राथमिक स्तर शिक्षण प्रभावशीलता एक महत्वपूर्ण कारक होता है।

पाल, रमेश कुमार (2016) छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, ने सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि सहायता प्राप्त शिक्षकों और गैर सहायता प्राप्त शिक्षकों की शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर होता है।

पाण्डेय, श्रीश (2017) अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा ने माध्यमिक स्तर पर विद्यालय समायोजन और शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन किया और पाया कि विद्यालय समायोजन और शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सकारात्मक सहसम्बन्ध होता है।

शोधकर्ता के शोध के क्षेत्र में हुए कार्यो के अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अभी तक जितने भी शोध हुए हैं उनमें विशेष रूप से बी0 टी0 सी0, विशिष्ट बी0 टी0 सी0, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर शिक्षकों की शिक्षण दक्षता, प्रभावशीलता तथा विभिन्न प्रकार के वातावरण का उपरोक्त शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव को लेकर तो शिक्षण कार्य हुए हैं लेकिन बी0 एड0 एवं अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता को लेकर अभी तक कोई काम नहीं हुआ हैं जबकि आज शिक्षकों के प्रशिक्षण को लेकर बहुत जोर दिया जा रहा है। इसलिए यह देखना स्वाभविक हो जाता है कि क्या प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में कोई अन्तर होता है। इसलिए शोधकर्ता ने उपरोक्त विषय को चुना है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध हेतु वर्णात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या–शोध हेतु जनसंख्या के रूप में छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर से सम्बद्ध शहरी क्षेत्र के समस्त बी0 एड0 एवं स्नातक स्तर के समस्त महाविद्यालयों को शामिल किया गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्शन विधि

प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श के रूप में 5 बी0 एड0 महाविद्यालयों तथा 5 अन्य स्नातक स्तरीय महाविद्यालयों से 50–50 शिक्षकों को यादृच्छिक विधि द्वारा चुना गया है।

शोध उपकरण

शोध की पूर्णता हेतु उपकरण के रूप मे डा0 प्रमोद कुमार और प्रो0 डी0 एन0 मुथा, मनोविज्ञान विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा निर्मित शिक्षक प्रभावशीलता स्केल का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विधि

शोध उपकरण से प्राप्त ऑकड़ों की प्रकृति को देखते हुए शोध हेतु निम्न विधियों का प्रयोग किया गया है– जिसका सूत्र निम्नवत् है–

$$\chi^2 = \sum \left\{ \frac{(fo-fe)^2}{fe} \right\}$$

fo = Observed frequency
fe = Expected frequency

$$\textbf{C.R.} = \frac{M1-M2}{\sigma d}$$

M1= Mean of Ist Group
M2= Mean of IInd Group

$$\sigma d = \sqrt{\frac{\sigma_1^{1}}{N_1} + \frac{\sigma_2^{2}}{N_2}}$$

ऑकड़ों का विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं का परिक्षण–

1. बी0 एड0 शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का स्तर सामान्य होता है

शून्य परिकल्पना

बी0 एड0 शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशीलता का स्तर सामान्य नहीं होता है।

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4* July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

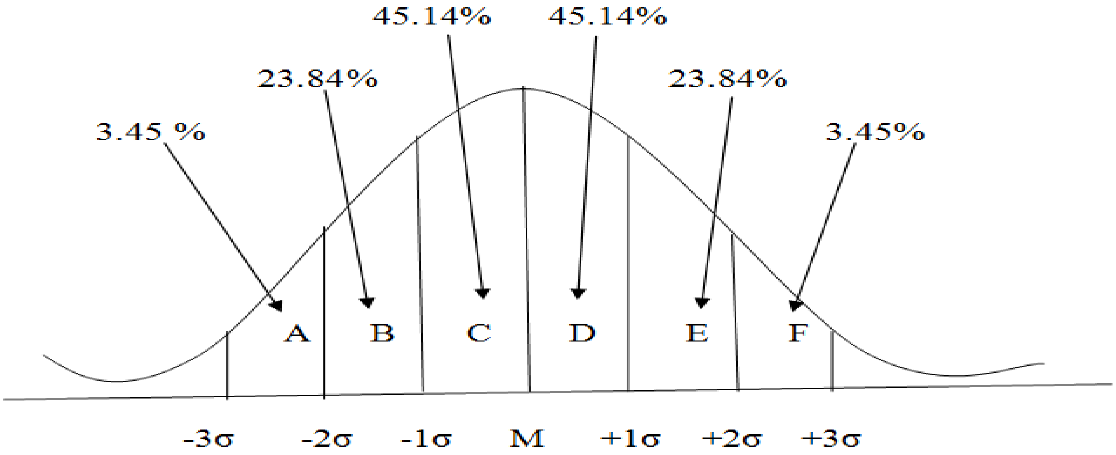

(NPC)

तालिका नं0 –1

आत्म प्रत्यय	पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतया असहमत	योग
Fo	3	10	15	14	8	50
Fe	2	12	22	12	2	50
x^2	21.39					

df= 4
table value = at.05 level =9.488

परिगणित का मान 21.39 जो दी गयी तालिका मान 9.488 से अधिक है। इसलिए यहाँ पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है और शोध की परिकल्पना को स्वीकृत करते हुए कहा जा सकता है कि बी0 एड0 महाविद्यालयों के शिक्षकों के आत्म प्रत्यय का स्तर सामान्य होता है।

2. अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों(बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0) का शिक्षण प्रभावशीलता का स्तर सामान्य होता है।

शून्य परिकल्पना

अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों (बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0) का शिक्षण प्रभावशीलता का स्तर सामान्य नहीं होता है।

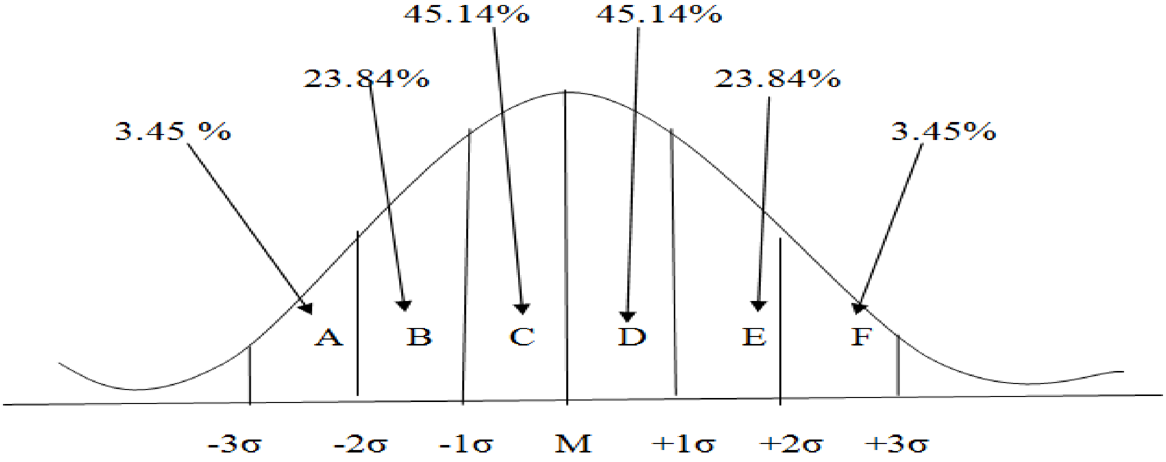

(NPC)

तालिका नं0 –2

आत्म प्रत्यय	पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतया असहमत	योग
Fo	6	12	12	13	7	50
Fe	2	12	22	12	2	50
x^2	28.91					

df= 4

table value = at.05 level =9.488

यहॉ परिगणित का मान 28.91 जो दी गयी तालिका मान 9.488 से अधिक है। इसलिए यहॉ पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है और शोध की परिकल्पना को स्वीकृत करते हुए कहा जा सकता है कि बी0 एड0 महाविद्यालयों के शिक्षकों के आत्म प्रत्यय का स्तर सामान्य होता है।

3. बी0एड0 शिक्षकों एवं अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों (बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0) के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता को अध्ययन करना

शून्य परिकल्पना

बी0एड0 शिक्षकों एवं अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों (बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0) के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका संख्या–3

आत्म प्रत्यय	शिक्षकों की संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
बी0एड0 शिक्षक	50	164.30	17.2	2.37
अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षक	50	156.50	15.7	

df = 98
C.R. Value at .05%= 1.98

यहॉ पर परिगणित क्रान्तिक अनुपात का मान 2.37 जो कि दी क्रान्तिक अनुपात की तालिका के .05 % पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.98 से अधिक है। इसलिए यहॉ पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है तथा शोध की परिकल्पना स्वीकृत होती है और यह कहा जा सकता है कि बी0 एड0 शिक्षकों और अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों के आत्म प्रत्यय में सार्थक अन्तर होता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

निष्कर्षों की व्याख्या–

1. बी0 एड0 महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में वितरण सामान्य पाये जाने का कारण शायद यह हो सकता है कि उत्तर प्रदेश में संचालित बी0 एड0 एवं एम0 एड0 शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की स्थितियॉ लगभग एक सी ही हैं। इसलिए ऐसे प्रशिक्षण संस्थानों से प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों में शिक्षण प्रभावशीलता का वितरण लगभग सामान होना सही ही होता है।
2. अन्य स्नातक स्तरीय (बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0) स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों में भी शिक्षण प्रभावशीलता के स्तर में वितरण सामान्य पाये जाने का कारण शायद यह हो सकता है कि उत्तर प्रदेश में (बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0) स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता और कार्य तथा स्थान की परिस्थितयॉ लगभग समान ही होती हैं। अतः उनके शिक्षण प्रभावशीलता में सामान्य वितरण होना स्वाभाविक प्रतीत होता है।
3. बी0 एड0 एवं अन्य स्नातक स्तरीय (बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0) शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर होने का कारण शायद यह हो सकता है कि बी0 एड0 स्तर पर अध्यायनरत शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त होते हैं और प्रशिक्षण के माध्यम से उनके अन्दर छिपी हुई प्रतिभाओं को विकसित करने का प्रयास किया जाता है जिसके कारण उनके अन्दर प्रभावशाली शिक्षक के गुण अधिक विकसित होते हैं जबकि बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0 स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों को इस प्रकार का कोई प्रशिक्षण प्राप्त नहीं होता है। इसलिए दोनों प्रकार के शिक्षकों के आत्म प्रत्यय में अन्तर होना सही प्रतीत होता है।

सुझाव

1. अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों (बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0) में शिक्षण प्रभावशीलता विकसित करने हेतु प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी आवश्यक है।
2. बी0 एड0 एवं अन्य स्नातक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों बेहतर शिक्षण प्रभावशीलता विकसित करने के उद्देश्य से समय–समय पर प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए।
3. दोनों प्रकार के शिक्षकों को अपने अन्दर शिक्षण प्रभावशीलता विकसित करने के उद्देश्य से नित नयी चीजों के प्रति जिज्ञासु प्रवृत्ति का होना चाहिए।
4. महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षण प्रभावशीलता विकसित करने के लिए अच्छे पुस्तकालय की सुविधा दोनों प्रकार के शिक्षकों के उपलब्ध होनी चाहिए ताकि अच्छी पुस्तकों को पढ़कर उनमें ज्ञान उत्पन्न हो सके।
5. इस प्रकार की कार्यशालाओं का आयोजन समय–समय पर होना चाहिए जिनसे शिक्षकों में शिक्षण प्रभावशीलता विकसित हो।
6. शिक्षकों को नई–नंई समस्याओं पर अपने विचार देने चाहिए इससे उनमें कल्पनाशीलता का विकास होता है, जिससे उनके शिक्षण प्रभावशीलता के विकसित होने में मदद हो सके।
7. बी0 एड0 तथा स्नातक स्तरीय शिक्षकों को शिक्षण करते समय अधिकाधिक विशिष्ट शिक्षण युक्तियों का प्रयोग करना चाहिए।
8. शिक्षकों को शिक्षण के दौरान विभिन्न प्रकार के शिक्षण आव्यूहों का प्रयोग करना चाहिए ऐसा करने से उनके शिक्षण प्रभावशीलता का विकास होता है और कक्षा शिक्षण रोचक तथा प्रभावपूर्ण होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *श्रीवास्तव, डी0 एन0एवं प्रीति वर्माः व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा– 2015*

2. *कपिल, एच0 के0: अनुसंधान विधियाँ, एच0 भार्गव बुक हाउस, 4/230 कचहरी घाट, आगरा– 2013*
3. *भार्गव, महेश: आधुनिक मनोविज्ञान, एच0 भार्गव बुक हाउस, 4/230 कचहरी घाट, आगरा– 2012*
4. *मंगल, एस0 के0: शिक्षा मनोविज्ञान, पी0 एच0 आई0 लर्निंग प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली– 2011*
5. *शर्मा, आर0 ए0: शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ–2015*
6. *शर्मा, दीप्ती: बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश–2014*
7. *विष्ट, प्रमोद: माध्यमिक स्तर के विद्यालयी वातावरण का शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर–2013*
8. *पाल, रमेश कुमार: सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर– 2016*
9. *भारतीय आधुनिक शिक्षा: वर्ष–27, अंक–2, एन0 सी0 ई0 आर0 टी0, नई दिल्ली, अक्टूबर–2004*
10. *भारतीय आधुनिक शिक्षा: वर्ष–30, अंक–3, एन0 सी0 ई0 आर0 टी0, नई दिल्ली, ISSN No. 0972-5636 अक्टूबर–2010*
11. *BRICS Journal of Educational Research, Vo. 01, Issue-3 & 4 ISSN No- 2231-5629, Maharshi Markandeshwar University, Ambala, July-2011*
12. *International Journal of Education & Allied Science, Vo. 01, No. 8, ISSN No. 0975-9680, A.A.C.C. Society, Meerut- July to December 2015*